International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Volume 6 Issue 4, May-June 2022 Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

# हरियाणा की लोक नाट्य परंपरा सांग

**डॉ. अंजु रानी शर्मा**

राजकीय महाविद्यालय सफीदों (जींद)

***How to cite this paper:*** Dr. Anju Rani Sharma "Folk Theater Tradition Song of Haryana" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-6 | Issue-4, June 2022, pp.2296-2299, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd49948.pdf

IJTSRD49948

Copyright © 2022 by author(s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

**प्राक्कथन**

जैसे ब्रज प्रदेश की "रासलीला" और बंगाल में "जात्रा", महाराष्ट्र में "तमाशा" तथा मैसूर में "यक्ष गान" प्रसिद्ध है उसी प्रकार हरियाणा में "स्वांग" का स्थान है। लोक संगीत की परंपरा अनंत है। यहां के लोग चाहे शिक्षित हो या अशिक्षित पूर्णतया अपने सामाजिक रीति रिवाज और संस्कारों से जुड़े हुए हैं और यदि यहां पर एकता के दर्शन करने हों तो सांग या स्वांग अथवा नाट्य ये सभी खुले मंच हैं और इनमें स्वभाव में सीधे - साधे बिना किसी आडंबर के लोक कला को प्रस्तुत करते सांगी जो बिना किसी विशेष उपकरण के केवल अपने अंगों के हाव भाव से दर्शकों को आकर्षित करते हैं।(1) स्वांग और मंच एक दूसरे के पूरक हैं। यही स्वांग जब लिखित रूप में मिले तो सांगीत और मंच पर प्रदर्शित हो जाए तो स्वांग। हरियाणा के लोक मंच की बात करें तो सर्वप्रथम सांग का दृश्य आंखों के सामने आ जाता है। हरियाणा को वीरभूमि के नाम से जाना जाता है क्योंकि हरियाणा के पानीपत में हुई तीन सुप्रसिद्ध लड़ाइयां और महाभारत जैसे धर्मयुद्ध का स्थान कुरुक्षेत्र जैसे अनेक युद्ध विश्व विख्यात हैं। इस वीरता में यदि एक गर्व निहित है तो कुछ छिपी सी कोमलता भी है और हृदय का यही कोमल अंश संगीत का प्रतिनिधित्व करता है और यहां से आरंभ होती है लोक मंच और लोक संगीत की अनंत यात्रा। मनुष्य अपनी हर परिस्थिति में मनोरंजन के कारण और साधन जुटा ही लेता है जो धीरे धीरे सामाजिक और आर्थिक रूप में विकसित होते हुए, अनेकों परिवर्तनों के साथ प्रसिद्धि को प्राप्त कर रीति रिवाज और रस्मों का रूप धारण कर लेते हैं। हरियाणा लोक संगीत और लोक मंच दोनों को एक दूसरे का मिला जुला रूप है तथापि दोनों के प्रदर्शन का प्रभाव अलग अलग है जैसे हरियाणा में विभिन्न लोकगीत, संस्कार गीत, कृषि गीत व ऋतु गीत गाए जाते हैं और लोक गायन की शैलियां गाथा गीत, गुग्गा गीत इत्यादि हैं लेकिन स्वांग में द्रष्टा और दृश्य एकाकार हो जाते हैं। इसीलिए संगीत से अधिक सांग ज्यादा प्रभावशाली लगता है। भारतमुनि द्वारा रचित नाटयशास्त्र को पंचम वेद के नाम से स्मरण किया जाता हैं(2) तो क्या सांग के द्वारा ऐसी प्रतिष्ठा को प्राप्त नहीं किया जा सकता। जबकि हरियाणा का जन उल्लास सांग के द्वारा ही प्रस्फुटित होता है।

**हरियाणा के सांग की यात्रा:**

अभिनय के सजीव प्रदर्शन में जैसे क्या भरत मुनि द्वारा वर्णित किसी भी मंच पर हिरण के पीछे दौड़ते रथ का प्रदर्शन संभव है लेकिन कलाकार के अभिनय और दर्शक की कल्पना से यह सब संभव है और यही सांग का उद्देश्य होता है।[(3)] हरियाणा के सांगों के गाथा गीतों में ऐतिहासिक व वीरों की गाथाओं का वर्णन होता है। कहते

हैं गुरु गोरखनाथ से काल में भी सांग का प्रचलन था और लोग कथा कीर्तन की अपेक्षा सांग को अधिक पसंद करते थे[4] भिन्न भिन्न प्रकार के चेहरे पर भाव लाने वाले को अक्सर प्रचलित भाषा में "सांग भरना" कहते हैं। जैसे किसी अन्य पात्र का रूप धारण करना। यहां के गीत गायको को भिन्न-भिन्न नाम से पुकारा जाता है जैसे युद्ध का गीत गाने वाले को दोहा गायक - जो युद्ध की गाथाओं का वर्णन दोहों के रूप में करते है जोगी कहलाते हैं और जो गायक धर्म से जुड़े हुए गीत गाते हैं उन्हें भजनी कहते हैं। इन सभी धार्मिक गीतों को इकतारा, खड़ताल, ढोलक, सारंगी, ढोल आदि वाद्यों की सहायता से इन्हें गाया व बजाया जाता है।

सांगों के माध्यम से सभी अन्य प्रदेशों की तरह प्रत्येक शुभ और अशुभ अवसर पर प्रचलित लोकगीत गाए जाते हैं जैसे: जन्म, शादी, बदलते मौसम, अनाज काटने और वर्षा और सूखा पड़ने पर अनेक पर्व व त्यौहार आदि लोकगीतों के माध्यम से इन सबका वर्णन कर अभिनय किया जाता है,चूंकि हरियाणा के लोकगीतों की गायन शैलियां विभिन्नता लिए हुए है और यहां के अधिकतर गीत या तो वीर पुरुषों की प्रशंसा में गाए जाते हैं या स्त्रियों से संबंधित हैं जिनका आधार मुक्तक गीत तथा कथात्मक गीत हैं। मुक्तक गीतों के अंतर्गत संस्कार गीत, ऋतु गीत, कृषि गीत, बाल गीत, नृत्य गीत। इन गीतों को हम "आल्हा व पवारा" के नाम से भी जानते हैं और क्थात्मक गीतों को पद्मावत की कथा, कृष्णलीला, शरण दे, राजा भोज, राजा हरीश चन्द्र, नल दमयतीं की ओजस भरी कहानियां, [5] लेकिन फिर भी सांग के लिए यह कह दिया जाता है की "सांग संगीत का फूहड़ रूप है "[6]

सांगी लोकगीतों की इन परंपराओं को चार शैलियों में विभाजित कर अपने किरदारों की प्रस्तुति करते है। होली राग, लोक राग, किस्सा राग। होली राग में होली से संबंधित गीत होते हैं गेय होने के कारण इन्हीं राग की संज्ञा दी गई है। शास्त्रीय संगीत के रागों से इनका कोई अभिप्राय नहीं है।दरअसल लोकगीतों का प्रवाह मन की भावनाओं का वास्तविक प्रतिबिंब होता है। इसकी तकनीक शास्त्रीय रागों की तरह जटिल नहीं होती परंतु इनका प्रभाव स्वाभाविक गतिमान होता है। जिसमें छंद तो नहीं परंतु रस आवश्यक होता है। लोक राग में लंबी-लंबी लोक कथाओं का गायन किया जाता है जो कई कई दिनों तक चलती रहती है। विभिन्न संत, शक्तिशाली योद्धा जैसे पूर्ण भक्त, ध्रुव भक्त व हर फूल जाट की कथा का वर्णन जोगियों के द्वारा समूह में दो तारा, सारंगी, मंजीरा व ढोलक लेकर सुबह-सुबह भीख मांगने जाने वालों के द्वारा किया जाता है और रात्रि में सांग प्रस्तुति में इन कथाओं पर अभिनय। इसी प्रकार जैसे भाट अपने लोक राग में राजाओं - महाराजाओं के किस्से - जैसे निहाल दे की कथा जो कि हरियाणा क्षेत्र में महाराग मानी जाती है उसे गाते हैं। जिसकी झलक इस प्रकार है:

**धन बिन किसी धनश्री**
**ऋतु बिन किस मल्हार**
**ए री भाईयां बिन माहिड़ कि सा**
**और पिया बिना किसा श्रृंगार**
**ए री बाई सुणती तो जइए मेरा संदेश**
**ए री छोड़ कै डीगर गया वा पोता चकवै बैन का। ।**

ये प्रस्तुति भी अभिनय के रूप में सांग के द्वारा साधारण लोग - जन तक पहुंचाया जाती थी। सांगों के मध्य में प्रस्तुति का एक प्रकार रागणी भी होता था। यद्यपि हरियाणवी संगीत में रागणी शब्द शास्त्रीय राग रागिनियो से भिन्न है। शास्त्र में जो रागिनी है वह शास्त्रों में बंधी हुई है परंतु हरियाणा में गाई जाने वाली रागणी कुछ भिन्न प्रकार की होती है। इसका मूल आधार सांग होता है और इसके अंतर्गत गाई जाने वाली रचना रागणी मानी जाती है। जिसमें एक चार या छह कली का गीत होता है। इसमें तीन घटक होते हैं पहले भाग में टेक, उसके बाद अंतरे को कली या तोड़ कहा जाता है। अंतरे कि यदि एक ही लाइन है तो उसे कली और यदि दूसरी पंक्ति हो तो उसे तोड़ कहा जाता है। रागिनी को कली के बोल के आधार पर 6 भागों में बांट दिया जाता है। जैसे दो बोल की रागणी, तीन, चार, पांच बोल की और छः बोल की रागणी। इनकी प्रस्तुति के लिए यदि हरियाणा में सांग यात्रा के विकास की बात करें तो सांग परंपरा सबसे पहले 1730 ई में प oकिशन लाल भाट द्वारा सांग के रूप में प्रस्तुत की गई जिसका स्वरूप मुजरे से मिलता जुलता था। सांग में 11 से 12 पात्र होते थे और एक जनाना और एक मर्दाना पात्र मंच पर खड़े होकर अभिनय करते थे। उनके पीछे ढोलक और सारंगी वादक घूम घूम कर विभिन्न आकर्षित लयकारियों में अपना वादन प्रस्तुत करते थे [7] किशन लाल भाट से पूर्व पुरुष स्वांग नहीं करते थे वेश्याओं के द्वारा ऐसे प्रदर्शन होते थे।

इसलिए सन 1730 के लगभग स्वांग का टकराव नक्कालों से तथा वेश्याओं से था। ऐसी स्थिति में नृत्य और नकल में कथानक का पुट देकर सांग को एक नई दिशा मिली। ।

उस समय की दोनों सबल विधाओं को अपने आंचल में समेटे लोक नाट्य के रूप प्रस्तुति जनता के सामने आई। यह काल सन 1900 तक अपने उतार चढ़ाव के साथ रहा। उसके बाद लगभग 20 वर्षों तक दीपचंद और सन 1923 तक हरदेव तथा सन 1944 तक लख्मीचंद व सन 1970 तक मांगेराम ने प्रमुख तौर पर इस परंपरा को आगे बढ़ाया [8] यदि हम सांग यात्रा की विस्तार से चर्चा करें तो सांग के आरंभ काल में 1730 से पूर्व सम्मानित व संपन्न व्यक्ति विशेष अवसरों पर नकलची व वेश्याओं को आमंत्रित करते थे। नक्काल भांति भांति के वेश बनाकर व नकल करके लोगों का मन बहलाते थे और अपने संगीत तथा नृत्य से जन समूह का मनोरंजन करते थे।

यद्यपि दोनों ही प्रदर्शनकार्यों को समाज में हीनता की दृष्टि से देखा जाता था परंतु संपन्न व्यक्ति उनके प्रदर्शन द्वारा अपनी प्रतिष्ठा का प्रदर्शन करते थे। कालांतर में नकलची तथा वेश्याओं ने एक दूसरे का रूप बदलकर प्रदर्शन करना आरंभ कर दिया। जिससे मनोरंजन के इस रूप को सांग का नाम तथा पहचान दे दी गई। लेकिन सन 1730 में किशन लाल भाट्ट द्वारा इस सांग परंपरा से नारियों को अलग कर दिया व नारी पात्र का स्थान पुरुष पात्र ने ही अपनी वेशभूषा बदलकर अभिव्यक्त करना शुरू कर दिया। इस सांग परंपरा में खुला मंच होता था। कोई पर्दा नहीं होता था बीच-बीच में पात्र अभिनय के साथ-साथ हुक्का भी गुड़गुड़ा लेते थे। सांग शुरू करने से पहले कागज व बांस से बने घोड़े के साथ नर्तक ढोल बजता हुआ मंच पर घूमता रहता था। प्रकाश के उचित प्रबंध के लिए एक मशालची हाथ में मशाल लेकर व दूसरे हाथ में तेल की कुप्पी लिए मंच पर खड़ा रहता था। सांग में प्रयुक्त होने वाली कथा का सूत्रधार जो की संवाद के बीच-बीच में कथा सुनाता रहता था। कभी कभी दो नारी के वेश में और अन्य पुरुष के वेश में अभिनय करते थे।जो भी कथा सुनाई जाती थी उनके संवाद काव्यमयी होते थे। छंद का जवान छंदों में, कली का जवाब कली में, रागणी का रागणी में और पंक्ति का पंक्ति में। किंतु प्रधानता श्रृंगार रस की ही रहती थी। प्रस्तुति या तो गद्य के रूप में होती थी या पद्य के रूप में और नृत्य केवल मनोरंजन के लिए ही किया जाता था। नृतक अपने गांव - भाव से, घुंघरू की झंकार से, कमर को मटका कर या घूम-घूम कर चेहरे की मुद्राओं से लोगों का मनोरंजन करता था।

ढोलक और सारंगी का प्रयोग किया जाता था। सांग में रागणी की प्रस्तुति हरियाणा की निराली अनुभूति है और इसकी लोकप्रियता का श्रेय केवल पंडित लख्मीचंद को ही जाता है उन्होंने प्राचीन रागणी का रूप बदलकर उसे सुंदर-सुंदर अलंकारों से सुसज्जित किया। यदि काव्य में उपमा की बात की जाए तो पंडित लख्मीचंद को हरियाणा का कालिदास कहा जाएगा। पंडित लख्मीचंद ने हर विषय पर रागणियों की रचना की है। उनकी रचनाओं में कबीर का गूढ़ चिंतन, रहीम की सादा जुबान और मीरा की असीम भक्ति के दर्शन होते हैं। यद्यपि हरियाणा में रागणी केवल सामाजिक मनोरंजन के लिए ही गाई जाती है परंतु फिर भी रागणी ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा समाज की दशा, रीतियां- कुरीतियां, समाज का आर्थिक पक्ष तथा सामाजिक पक्ष उजागर होता है। रागणियों को विभिन्न विषयों में बांध कर भी गाया जाता है। ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा श्रृंगारिक रागणी की भाषा में छंद, अलंकार व मुहावरों के प्रतीक भी मिलते हैं। प्राचीन रागणियों में तो रचनाकार का कभी-कभी ही नाम मिलता है परंतु वर्तमान रागनियों में रचनाकार का नाम अवश्य ही मिलता है।

वर्तमान समय में हरियाणवी संगीत में गजल, भजन, गीत, लोकगीत तथा पॉप सॉन्ग को शामिल किया गया है। पॉप सॉन्ग को शामिल करने का उद्देश्य लोगों का झुकाव पाश्चात्य संगीत की और होना भी है। तत्पश्चात लोगों की पसंद को प्राचीन परंपरा से जोड़कर पाश्चात्य संगीत की प्रथा चलाई गई है ताकि पाश्चात्य संगीत के साथ समाहित करके यह लोक संगीत अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचे। हरियाणा की विलुप्त हो चुकी इस संस्कृति को सुरताल की नई चमक के साथ मंच प्रदान किया गया है और वह हरियाणा जो अब तक केवल एग्रीकल्चर के नाम से प्रसिद्ध था अब उसमें कल्चर के रस की बूंद डाली गई है जिससे हरियाणा का व्यक्ति भी कला संस्कृति के इस पक्ष से परिचित रहेगा और पंजाब, महाराष्ट्र, बंगाल, राजस्थान से अपनी दोस्ती का हाथ मिलाकर सुर से भरे मोतियों के इस सागर में अपना स्थान बना पाएगा।

**साभार पुस्तक सूची:**

[1] हरियाणा का लोक मंच, राजा राम शास्त्री, पृष्ठ संख्या 6।

[2] कन्नौजी लोक साहित्य समाज का प्रतिबिंब, डॉ o एस o सी o त्रिपाठी, पृष्ट संख्या 106।

[3] हरियाणा का लोक मंच राजा राम शास्त्री। पृष्ट संख्या 4

[4] हरियाणा लोक नाट्य परम्परा, पण्डित मांगे राम, पृष्ट संख्या 23।

[5] संगीत एक लोक नाट्य परम्परा, श्री राम नारायण अग्रवाल, पृष्ट संख्या 22।

[6] हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य, शंकर लाल यादव, पंचम अध्याय।

[7] हरियाणा का लोक मंच, राजा राम शास्त्री, पृष्ट संख्या 10।

[8] हरियाणा का लोक मंच, राजा राम शास्त्री, पृष्ट संख्या 8।